Toppersnotes®
Unleash the topper in you

3rd – ग्रेड

अध्यापक

कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर

भाग - 6

लेवल - प्रथम

सामाजिक अध्ययन

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	मुगल साम्राज्य	1
2	बजट 2024–25	7
3	कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र	12
4	ग्रामीण विकास और पंचायती राज	22
5	आधारभूत संरचना और संसाधन	28
6	सेवा क्षेत्र	33
7	राजस्थान में शहरी विकास	40
8	राज्य वित्त एवं विकास के अन्य संसाधन	47
9	पृथ्वी के प्रमुख स्थलरुप	51
10	भारत की प्राकृतिक वनस्पति	72
11	भारतीय संविधान	81
12	संविधान निर्माण में राजस्थान का योगदान	95
13	राजस्थान में लोक प्रशासन	97
14	सामाजिक अध्ययन की संकल्पना एवं प्रकृति	103
15	सामाजिक अध्ययन में सहायक सामग्री	105
16	सामाजिक अध्ययन की समस्या	118
17	सामाजिक अध्ययन में प्रायोजना कार्य	119
18	सामाजिक अध्ययन में मूल्यांकन, निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण	120

1 CHAPTER मुगल साम्राज्य

- मेवाड के शासक साँगा के समय मुगल बादशाह **बाबर काबुल** का शासक था।
- बाबर ने पानीपत के प्रथम युद्ध (20 अप्रैल 1526) में इब्राहिम लोदी को हराकर दिल्ली में मुगल शासन की स्थापना की थी।

बयाना युद्ध

- राणा सांगा व बाबर के मध्य 16 फरवरी 1527, को हुआ जिसमें राणा सांगा विजयी रहा।
- बयाना युद्ध में बाबर का सेनापति **संगर खाँ** मारा गया।

खानवा युद्ध 17 मार्च 1527

- राणा सांगा ने खानवा युद्ध से पहले पाती परवन की राजपूत परम्परा को जीवित करके राजस्थान के प्रत्येक राजा को अपनी ओर से युद्ध में शामिल होने का न्यौता दिया था।
- राणा साँगा अन्तिम हिन्दू राजा थे, जिनके सेनापतित्व में सब राजपूत जातियाँ विदेशियों को भारत से निकालने के लिए एक साथ सम्मिलित हुई थी। राणा सांगा सारे राजपूताने की सेना के सेनापति बने थे।
- खानवा युद्ध में सांगा के सेनानायक दलपत सिंह, रायमल राठौड, रावत जग्गा, रावत बाघसिंह, खेतसिंह, कर्मचन्द, रतनसिंह मेंडतिया, परमार गोकुलदास, चन्द्रभान सिंह, भोपतराय, उदयसिंह, हसन खाँ मेवाती, माणिकचन्द चौहान आदि योद्धाओ ने वीरगति पायी थी।

राणा सांगा

- खानवा युद्ध में राणा सांगा के घायल हो जाने के बाद इसके सरदार अखैराज बसावा ले गये।
- राणा के राजकीय चिह्न झाला अज्जा ने धारण किये व वीरगति को प्राप्त हो गये।
- इनकी स्मृति में इनके वंशजो को (सादड़ी के राजराणाओं) को महाराणा के समस्त राजचिह्न धारण करने का अधिकार प्रदान किया।
- कालपी के पास इरिच गाँव मे उसके साथी राजपूतो ने विष दे दिया जिससे राणा सांगा की 30 जनवरी 1528 को मृत्यु हो गयी।
- माण्डलगढ़ में उनकी समाधि व छतरी बनी हुई है।

राणा सांगा व बाबर के मध्य युद्ध के कारण

- दोनों ही राजाओ का अत्यधिक महत्वाकांक्षी एवं राज्य विस्तार के लिए प्रयासरत होना।
- बाबर व सांगा ने इब्राहिम लोदी पर आक्रमण करने के लिए संधि की थी, परन्तु युद्ध के समय सांगा द्वारा कोई सहायता नहीं करने पर बाबर ने संधि का उल्लंघन बताया व आक्रमण किया।
- अफगान सेनापति हसन खाँ मेवाती को शरण देना भी युद्ध का कारण था।
- बयाना दुर्ग राजस्थान के प्रवेश द्वार पर स्थित होने के कारण अत्यधिक सामरिक महत्व का दुर्ग था, जिस पर सांगा एवं बाबर दोनों अधिकार चाहते थे।

सांगा की पराजय के कारण

- सांगा ने प्रथम विजय के बाद तुरन्त युद्ध नहीं करके बाबर को युद्ध तैयारी का समय देना।
- सांगा की युद्ध तकनीक पुरानी होना।
- बाबर की युद्ध पद्धति तुलुगमा से सांगा के सैनिकों का अनभिज्ञ होना।
- राजपूत सैनिक रायसीन के सलहदी तंवर व नागौर के खानजादा द्वारा सांगा के साथ विश्वासघात करना।
- बाबर द्वारा तोपों व बंदूकों का प्रयोग करना।

नोट– राणा सांगा को अन्तिम भारतीय हिन्दू सम्राट कहा जाता है।

- राणा सांगा की पत्नी श्रृंगार देवी (जोधपुर के राजा रावा जोधा की पुत्री थी) ने घोसुण्डी बावडी का निर्माण करवाया था, जिसमें घोसुण्डी शिलालेख खुदवाया।
- बाबर ने आत्मकथा तुजुके बाबरी में लिखा कि सांगा का राज्य 10 करोड़ आमदनी व उसकी सेना में 1 लाख सैनिक सवार थे। सांगा के साथ 7 राजा, 9 राव, 104 छोटे सरदार रहते थे।
- **कर्नल टॉड ने सांगा को सिपाही का अंश** (भग्नावेश) कहा।

महाराणा प्रताप (1572–1597 ई.) एवं अकबर

- प्रताप का जन्म 9 मई, 1540 को कुम्भलगढ़ में बने कटारगढ के बादलमहल के जूनी छतरी नामक कमरे में हुआ था।
- **पिता** – उदयसिंह
- **माता** – पाली के अखैराज सौनगरा की पुत्री जैवंता बाई थी।
- प्रताप को बचपन में किका के नाम से पुकारा जाता था। जिसका अर्थ साहसी बालक 1572 में उदयसिंह की मृत्यु गोगुन्दा (उदयपुर) में हुई थी। उदयसिंह ने अपनी पत्नी धीरबाई के कहने पर अपने पुत्र जगमाल को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था।
- गोगुन्दा में उदयसिंह के दाह संस्कार से लौटते समय राजपूत सरदारों ने 28 फरवरी, 1572 को गोगुन्दा में महादेव बावड़ी के निकट महाराणा प्रताप का राज्याभिषेक कर दिया था। कृष्णदास चूंडावत के द्वारा प्रताप की कमर में तलवार बांधी गयी थी। इस अवसर पर ग्वालियर के शासक रामसिंह तोमर भी उपस्थित थे।
- कुम्भलगढ में महाराणा प्रताप का विधिवत रूप से राज्याभिषेक किया गया तथा इस अवसर पर जोधपुर के शासक चन्द्रसेन भी उपस्थित थे। इस घटना को राजमहलों कि क्रान्ति कहते है, क्योंकि राजपूत सरदारों द्वारा प्रथम बार उत्तराधिकार में हस्तक्षेप किया था। जगमाल अकबर के पास चला गया था। अकबर ने जगमाल को जहाजपुर/आँधी (भीलवाड़ा) की जागीर प्रदान की थी।
- अकबर ने प्रताप के पास चार शिष्टमंडल भेजे।
- जून–सितम्बर, 1572 जलाल खाँ कोरची
- मार्च–जुलाई, 1573 मानसिंह
- जेम्स टॉड के अनुसार मानसिंह व महाराणा प्रताप की मुलाकात उदयसागर की पाल पर हुई। जबकि अबुल फ़जल के अनुसार यह मुलाकात गोगुन्दा में हुई थी। सितम्बर 1573 भगवन्त दास अबुल फज़ल ने लिखा है कि इस समय प्रताप ने अकबर की अधिनता स्वीकार कर ली थी। बाद में प्रताप को पृथ्वीराज राठौड का इसी संदर्भ में पत्र प्राप्त हुआ।
- दिसम्बर 1573, टोडरमल को अकबर ने स्व–विवेक से राजपूत शासको के साथ संधि करने का अधिकार प्रदान किया था।
- **हल्दी घाटी का युद्ध** – 18 जून, 1576
- अकबर युद्ध की तैयारियों के लिए स्वयं अजमेर आया। अजमेर स्थित दौलत खाने या मैगजिन दुर्ग में अकबर ने युद्ध की व्यूह रचना बनाई थी। अकबर ने अपना सेनापति मानसिंह को नियुक्त किया। इस युद्ध में मानसिंह के हाथी का नाम **मर्दाना** था। अकबर ने मानसिंह के साथ अपना **सवाई नामक** हाथी भेजा था। इस युद्ध में मुगलों की ओर से लडने वाले अन्य हाथी **गजमुक्ता व गजप्रसाद** थे। अकबर ने आगरा से दूसरी सेना आसफ खाँ के नेतृत्व में भेजी थी। इस युद्ध का एकमात्र प्रत्यक्ष–दर्शी इतिहासकार आसफ खां की सेना के साथ बदायूनी आया था।
- मानसिंह ने युद्ध के लिए मोलेला (राजसमंद) में पड़ाव लगाया। प्रताप ने अपनी भील सेना का नेतृत्व करने के लिए **पूंजा भील** को भेजा था। प्रताप का सेनापति **झाला मना** था। सेना के हरावल भाग का नेतृत्व हकीम खां सूरी के द्वारा किया गया। इस युद्ध में प्रताप के हाथियों के नाम **रामप्रसाद व लूणा** थे।
- प्रताप ने युद्ध के लिए लोहसिंग गाँव में पड़ाव लगाया था। इस कारण से हल्दी घाटी के युद्ध को लोहसिंग का युद्ध भी कहा जाता है।
- मेवाड़ का पहला उदारक हमीर सिसोदिया था।
- बलीच ग्राम में चेतक की समाधि स्थल है।
- मानसिंह की सेना के अग्रीम भाग/हरावल भाग का नेतृत्व जगन्नाथ कछवाह कर रहे थे।
- युद्ध का प्रारम्भ हकीम खां सूरी ने बिना प्रताप की सूचना मिले ही कर दिया था। इसे भी प्रताप की हार का एक कारण माना जाता है। इस कारण मानसिंह अपनी सेना को सुरक्षित पिछे हटाते हुए खमनौर तक ले गया था। मिहतर खाँ ने अकबर के आने की झूठी अफवाह फैला दी। जिस कारण से मानसिंह ने खमनौर से आक्रमण प्रारम्भ किया। इसीलिए अबुल–फज़ल ने हल्दी घाटी के युद्ध को खमनौर का युद्ध कहा है।
- खमनौर में हकीम खां सूरी युद्ध करते हुए मारा गया था।
- जिस स्थान पर मेवाड़ की सेनाए पराजित हुई वो पूरा स्थान खून से लाल हो गया था। इसी को रक्त तलाई कहा जाता है। बदायूनी ने यहा अपनी दाडी को खून से लाल किया।
- रक्त तलाई में मानसिंह व प्रताप के बीच युद्ध हुआ था। मानसिंह के हाथी मर्दाना की सूड में लगे खंजर से चेतक घायल हो गया था। प्रताप के राजकीय चिह्न झाला बिदा को पहनाये गये। मेवाड की सेना इसके बाद गोगुन्दा पहुंची तथा 21 जून, 1576 को मानसिंह ने बाकी बची सेना को गोगुन्दा से पराजित किया था।
- गोपीनाथ शर्मा का मत है कि मानसिंह ने दोनो युद्ध 21 जून को विजित किये थे।

- आशीर्वाद लाल श्रीवास्तव का मत है कि दोनो युद्ध एक ही दिन विजित किये गये। लाल श्रीवास्तव ने युद्ध को बादशाह बाग व गोपीनाथ शर्मा ने अनिर्णायक युद्ध व जेम्स टॉड ने मेवाड की थर्मोपोली व प्रत्येक राजूत सैनिक को लियोनायड्स कहा है।
- अकबर को हल्दी घाटी युद्ध की सूचना मोहम्मद इब्राहीम खाँ के द्वारा दी गयी थी।
- अक्टूबर, 1576 में अकबर व भगवंत दास चित्तौड आये थे। अकबर ने उदयपुर का नाम बदलकर मोहम्मदाबाद रख दिया था। प्रताप के हाथी रामप्रसाद का नाम पीर प्रसाद रखा गया। इसके बाद अकबर ने अपने सेनापती शाहबाज खाँ को प्रताप के विरूद्ध भेजा था। शाहबाज खाँ ने 15 अक्टूबर, 1577 को प्रताप को कुंभलगढ़ के युद्ध में परास्त किया। कुंभलगढ का दुर्ग जीतने वाला एकमात्र मुस्लिम सेनापती शाहबाज खाँ ही था। इस युद्ध में प्रताप का सेनापती मान सोनगरा था। शाहबाज खाँ ने दिसम्बर 1578, अक्टूबर–नवम्बर 1579 में प्रताप को हराया था। महाराणा प्रताप की मुलाकात चूलिया (चित्तौड) में भामाशाह व उनके भाई ताराचंद से हुई थी। ढोलाण नामक गांव में इन्होने अपनी समस्त सम्पती महाराणा प्रताप को दान दे दी थी। भामाशाह को मेवाड का कर्ण व दूसरा उद्दारक कहा जताा है।
- 1581 में अकबर अब्दुल रहिम खाने खाना को प्रताप के विरूद्ध भेजा था। अक्टूबर 1582 में दिवेर (राजसंमद) का युद्ध लड़ा गया। इस युद्ध में प्रताप के पुत्र अमर सिंह ने मुगल सेनापति सेरीया सुल्तान खाँ की हत्या कर दी व मुगल सेना पराजित हुई। इस युद्ध को जेम्स टॉड ने मेवाड़ का मैराथन व प्रताप के गौरव का प्रतीक कहा है।
- 1584 में अकबर ने जगन्नाथ कछवाह के नेतृत्व में प्रताप के विरूद्ध अंतिम सैनिक अभियान भेजा था।
- **1585 में प्रताप ने चांवड (उदयपुर) को अपनी राजधानी बनाया।** यही पर 19 जनवरी, 1597 को महाराणा प्रताप की मृत्यु हुई। बाडौली में प्रताप का दाह संस्कार किया गया था। यही पर इनकी 8 खम्भो की छतरी स्थित है।
- अकबर को प्रताप की मृत्यु की सूचना दरसा आढा के द्वारा दी गई।
- प्रताप को मेवाड केसरी के नाम से भी जाना जाता है।

महाराणा राजसिंह 1652–1680 एवं औरंगजेब

राजसिंह का जन्म – 24 सितम्बर, 1629 ई. उदयपुर में हुआ।

पिता का नाम – जगतसिंह

माता का नाम – जनादे कंवर मेड़तणी

राजसिंह का राज्याभिषेक – 10 अक्टूबर, 1652 (मेवाड़)

- महाराणा राजसिंह ने एकलिंगजी मन्दिर जाकर रत्नों का तुलादान किया था।
- शाहजहाँ के पुत्रों में उत्तराधिकार की लडाई शुरू होने पर राजसिंह ने इस अवसर का लाभ उठाकर मुगलों द्वारा जीते हुए इलाकों पर पुनः अधिकार करना शुरू कर दिया, **राजसिंह ने सर्वप्रथम मांडलगढ** पर सेना भेजी, जहाँ का शासन बादशाह ने किशनगढ के रूपसिंह को दे रखा था, किले का दुर्गाध्यक्ष राघवसिंह वहाँ से भाग गया व माण्डलगढ दुर्ग पर महाराणा राजसिंह का अधिकार हो गया।
- राजसिंह ने मुगल इलाको पर अधिकार करने के लिए राजकुल की टीकादौड परम्परा को माध्यम बनाया, जिसके अन्तर्गत महाराणा ने दरीबा, मांडल, बनेडा, शाहपुरा, जहाजपुर, सावर, फुलिया, केकडी आदि को अपने अधीन कर लिया।
- राजसिंह ने उत्तराधिकार युद्ध में औरंगजेब का सहयोग किया था। (मेवाड का प्रथम शासक जिन्होंने मुगलों का समर्थन किया था)
- औरंगजेब के जजिया कर के विरोध में राजसिंह ने उसको एक पत्र लिखा था जिसकी तीन प्रतियाँ प्राप्त होती है।
  1. रॉयल एशियाटिक सोसायटी लंदन के संग्रह में
  2. बंगाल एशियाटिक सोसायटी के संग्रह में
  3. उदयपुर राज्य के राजकीय दफ्तर में
- औरंगजेब ने राजसिंह द्वारा जजिया कर का विरोध करने पर क्रोधित होकर जोधपुर के शासक महाराजा जसवंत की मृत्यु निःसंतान होने पर मारवाड़ का राज्य खालसा घोषित करके मुगल साम्राज्य में मिला लिया।
- महाराजा जसवंत सिंह की रानी ने कुँवर अजित सिंह को जन्म दिया, औरंगजेब ने कूटनीति चाल चलकर कुँवर अजित सिंह को दिल्ली दरबार में लाने को कहा व फिर उनको कैद कर लिया।
- वीर दुर्गादास राठौड़ ने अपनी चालाकी से गोराधाय व बघेली की सहायता से अजित सिंह को औरंगजेब के चंगुल से मुक्त करवा लिया व दुर्गादास ने महाराणा राजसिंह से अजितसिंह को शरण देने व रक्षा करने के लिए अर्जी लिखी। महाराणा ने अजित सिंह को शरण दी तथा उनके पालन–पोषण के लिए केलवा की जागीर प्रदान की।

उपाधि – हाइड्रोलिक रूलर (पानी की व्यवस्था करने के कारण)
विजय कटकातु (बहुत सारे युद्ध जीतने के कारण)

राव चन्द्रसेन (1562–1581) एवं अकबर

राव चन्द्रसेन का जन्म – 30 जुलाई, 1541

पिता – राव मालदेव

राज्याभिषेक – 31 दिसम्बर, 1562

राव मालदेव ने अपने बडे पुत्र रामसिंह व उदयसिंह के स्थान पर अपने छोटे पुत्र राव चन्द्रसेन को उत्तराधिकारी बनाया।

उदय सिंह (फलौदी की जागीर)
राम सिंह (गूँदोच की जागीर)
रायमल्ल (सिवाणा की जागीर)

- राव चन्द्रसेन के राज्यरोहण से असंतुष्ट सामन्तों ने चन्द्रसेन के भाइयों में कलह उत्पन्न करवा दी जिसका फायदा अकबर ने उठाया।
- रावचन्द्रसेन ने अपने भाई रायमल व रामसिंह को हराने के बाद उदयसिंह को भी लोहावट के युद्ध में हराया।
- रामसिंह नाराज होकर अकबर की शरण में चला जाता है।
- हुसैन कुली खाँ के नेतृत्व में मुगल सेना ने 1564 ई. में जोधपुर पर अधिकार कर लिया।

अकबर का नागौर दरबार – 1570

- नागौर दरबार के दौरान अकबर ने दुष्काल से राहत दिलाने के लिए एक तालाब खुदवाया था जिसका नाम शुक्रतालाब रखा गया।
- अकबर द्वारा नागौर दरबार लगाने का उद्देश्य राजस्थान की राजनीतिक स्थिति का अध्ययन कर मुगल वर्चस्व का प्रचार–प्रसार करना था।
- नागौर दरबार में अकबर की सेवा में उपस्थित राजा निम्न थे :–
  1. रावल हरराज (जैसलमेर)
  2. राव कल्याणमल (बीकानेर) व उनके पुत्र रायसिंह
  3. उदयसिंह (राव चन्द्रसेन के बडे भाई)
- मारवाड की परतंत्रता में नागौर दरबार एक महत्वपूर्ण कडी साबित हुआ।
- 30 अक्टूबर, 1572 को बीकानेर के शासक राव रायसिंह को जोधपुर का शासक नियुक्त किया।
- चन्द्रसेन ने भद्राजुण से जाने के बाद सिवाणा को अपनी राजधानी बनाया तो शाही सेना कुली खाँ के नेतृत्व में सिवाणा पर आक्रमण किया तो राव चन्द्रसेन सिवाणा किले की रक्षा का भार अपने सेनापति राठौड फत्ता को सौंपकर स्वयं रामपुरा की पहाडियों में चला गया।
- सिवाणा आक्रमण के समय मुगल सेना के साथ निम्न शासकों ने भाग लिया था –
  1. बीकानेर के रायसिंह
  2. केशवदास मेडतिया
  3. जगतराय

राव चन्द्रसेन पर आक्रमण

1574 ई. जलाल खाँ (असफल)
1576 ई. शाहबाज खाँ

- शाहबाज खाँ चन्द्रसेन को पकडने में असफल रहे, लेकिन उन्होंने सिवाणा के किले पर अधिकार कर लिया।
- सिवाणा गढ मुगलों द्वारा जीते जाने के बाद राव चन्द्रसेन का धुमन्तु जीवन शुरू हुआ जो इस प्रकार निकला–

  सिवाणा → पीपलोद → काणूजा (सोजत) → मेवाड → सिरोही → डूँगरपुर → बाँसवाडा (राजा प्रताप सिंह का आश्रय) → कोटडा (मेवाड)
- कोटड़ा मेवाड़ में राव चन्द्रसेन का मिलन महराणा प्रताप से हुआ।
- राव चन्द्रसेन ने 19 जुलाई, 1579 को सोजत पर अधिकार कर लिया लेकिन मुगल सेना के आने पर वे **सारण के पहाडी जंगलों** (सोजत) में चले गये।
- सारण की पहाडियाँ जहाँ राव चन्द्रसेन का अन्तिम संस्कार किया गया वहाँ राव चन्द्रसेन की घोड़े पर सवार मूर्ति बनी है। जिसके आगे 5 स्त्रियाँ खड़ी है, जिससे प्रमाणित होता है कि उनके पीछे 5 सती हुई थी।
- राव चन्द्रसेन मुगलो का प्रतिरोध करने में राजपूत शासकों के आदर्श कहे जा सकते है।
- राव चन्द्रसेन को मेवाड के राणा प्रताप का पथ प्रदर्शक कहा जाता है।
- राव चन्द्रसेन ऐसे प्रथम राजपूत शासक थे, जिन्होंने रणनीति में दुर्ग के स्थान पर जंगल और पहाडी क्षेत्र को ज्यादा महत्व दिया था।
- राव चन्द्रसेन ने खुले युद्ध के स्थान पर छापामार युद्ध प्रणाली का महत्व स्थापित करने वाले महाराणा उदयसिंह के बाद दूसरे शासक थे।

आमेर के शासक मानसिंह (1589–1614)

- सर्वप्रथम 1562 ई. में राजपूतों ने मुगलों के साथ सहयोग की नीति अपनाई थी।
- आमेर के शासक भारमल ने अपनी पुत्री जोधाबाई या हरखा बाई की शादी अकबर से की जो बाद में मरियम उज्जमानी के नाम से प्रसिद्ध हुई।
- भारमल पहले कछवाह शासक थे जिन्होंने मुगलों से वैवाहिक संबंध स्थापित किया।
- मानसिंह का जन्म – 2 दिसम्बर, 1550 ई. (मोजमाबाद)
- मानसिंह राजा भारमल के पौत्र व भगवन्तदास के पुत्र थे ।
- मानसिंह 1562 ई. से जीवन पर्यन्त मुगलों की सेवा में रहे, उन्होंने सेनानायक, सूबेदार, मनसबदार के रूप में मुगलों से जुडे रहे।
- मानसिंह अकबर के सर्वाधिक विश्वस्त सेनानायक थे।

- मानसिंह ने 1589 ई. में आमेर का शासन संभाला।
- 7000 सवार व जात का मनसब केवल मानसिंह व कोका अजीज को ही प्राप्त था।
- बादशाह द्वारा गुजरात विजय (1572 ई.) के बाद मानसिंह को वागड व मेवाड़ भेजकर मुगल अधिपत्य स्थापित करने का जिम्मा सौंपा।
- मानसिंह ने डूँगरपूर के शासक आसकरण व बाँसवाडा के शासक रावल प्रतापसिंह को अकबर की अधीनता स्वीकार कराई।

मानसिंह व महाराण प्रताप का मिलन

जून, 1573 ई. में मानसिंह ने महाराणा प्रताप से मुलाकात की पर वे महाराणा प्रताप को संधि के लिए राजी करने में असफल रहे।

हल्दीघाटी युद्ध

महाराणा प्रताप व मानसिंह का आमना–सामना हल्दीघाटी के पास रक्त तलाई नामक स्थान पर 21 जून, 1576 ई. को हुआ, जिसमें मानसिंह विजयी रहा। पर महाराणा प्रताप को पकडने में कामयाब नहीं हुए।

मानसिंह के अन्य विजय अभियान

1. **उत्तरी–पश्चिम सीमान्त प्रान्त में विद्रोह का दमन** – मानसिंह ने 1580 ई. में उत्तरी–पश्चिम सीमा प्रान्त में अफगानों व रोशनियाओ के विद्रोह को शांत किया।
2. **काबुल विजय** – मिर्जा हकीम खाँ के विद्रोह को दबाने के लिए मानसिंह व भगवन्तदास के नेतृत्व में सेना भेजी। 1581 ई. में काबुल विजय की।

- 1585 ई. में मानसिंह को काबुल का सूबेदार नियुक्त किया।
- बिहार की सूबेदारी – (1587 ई.)
- **उडीसा विजय –**

  मानसिंह ने 1592 ई. में उडीसा के अफगान शासक नासिर खाँ को पराजित किया।
- बंगाल का सूबेदार – (1594 ई.)
- 1596 में कूचबिहार के शासक राजा लक्ष्मीनारायण को पराजित किया व उसकी बहिन अबलादेवी से विवाह किया।
- पूर्वी बंगाल के राजा को पराजित किया तथा वहाँ से 1604 में शिलामाता की मूर्ति ले आये व आमेर के महलो मे प्रतिष्ठित करवाया।

अहमद नगर अभियान

जहाँगीर ने 1611 ई. में मानसिंह को अहमद नगर अभियान पर भेजा। वहीं पर एलिचपुर(महाराष्ट्र) में **17 जुलाई, 1614** ई. को राजा मानसिंह की मृत्यु हो गई।

- मानसिंह के समय रायमुरारीदास ने **मानचरित्र, मानप्रकाश** तथा जगन्नाथ ने **मानसिंह कीर्ति मुक्तावली** नामक ग्रंथों की रचना की।
- मानसिंह ने बैंकटपुर II (पटना) में भवानी शंकर का मंदिर बनवाया था।
- मानसिंह के शासनकाल में संत दादू जी ने दादूवाणी की रचना की थी।
- मानसिंह के बाद आमेर का शासक मिर्जा राजा भावसिंह 1614 ई. में बना।
- आमेर मे इनकी रानी कनकावतीजी ने अपने पुत्र जगतसिंह का स्मृति मे जगत शिरोमणि मंदिर का निर्माण करवाया।

बीकानेर के राजा रायसिंह (1574–1612 ई.)

महाराजा रायसिंह का जन्म – 20 जुलाई, 1541 ई. (बीकानेर)

पिता – कल्याणमल

राज्याभिषेक – 1574

उपाधि – महाराजा, महाराजाधिराज

- रायसिंह के पिता कल्याणमल ने अकबर के नागौर दरबार में अपने पुत्र पृथ्वीराज व रायसिंह सहित बादशाह की सेवा में उपस्थित होकर मुगलों की अधीनता स्वीकार की थी।

नोट– कल्याणमल अकबर की अधीनता स्वीकार करने वाले बीकानेर के प्रथम शासक थे।

कठोली का युद्ध – (1573 ई.)

रायसिंह के नेतृत्व में इब्राहिम हुसैन मिर्जा का दमन किया गया था।

सिवाणा पर अधिकार – (1574 ई. में)

रायसिंह ने 1574 ई. में सिवाणा दुर्ग पर अधिकार किया, जिसमें शाहबाज खाँ भी साथ थे।

देवड़ा सुरताण का दमन – (1576 ई.)

- सिरोही के देवडा सुरताण के विद्रोह का दमन कर अकबर की अधीनता स्वीकार करने पर मजबूर किया।
- रायसिंह ने 1577 ई. में आबू के किले पर अधिकार कर लिया।

रायसिंह का गुजरात अभियान

गुजरात में मिर्जा बंधुओं के विद्रोह को कुचलने के लिए अकबर के साथ अभियान पर गए। इस अभियान में रायसिंह ने **हुसैन मिर्जा** को मौत के घाट उतार दिया था इससे अकबर बडा प्रभावित हुआ।

काबुल अभियान – (1581 ई.)

अकबर के सौतेले भाई हकीम मिर्जा को हराया।

रायसिंह प्रशस्ति

- रचयिता – जइता
- भाषा – संस्कृत
- रायसिंह प्रशस्ति में राव बीका से लेकर राय सिंह तक के शासकों का वर्णन है।

- जूनागढ के प्रवेश द्वार कर्णपोल व सूरजपोल है।
- सूरजपोल के पास जयमल मेडतिया व फत्ता सिसोदिया की मूर्तियां स्थापित है।

जूनागढ दूर्ग में स्थित इमारत

फूलमहल, चन्द्रमहल, गज मंदिर, रत्न मंदिर, छत्रमहल आदि है।

- जहाँगीर ने रायसिंह का मनसब 4000 से बढाकर 5000 कर दिया।
- 22 जनवरी 1612 ई. को रायसिंह का बुरहानपुर मे देहान्त हो गया।
- अकबर ने रायसिंह को जूनागढ, नागौर, शम्साबाद जैसी महत्वपूर्ण जागीर प्रदान की थी।
- कर्मचन्द्रवंशोत्कीर्तनकं काव्य में रायसिंह को राजेन्द्र कहा गया है।
- रायसिंह के शासनकाल में जैन साधु ज्ञान विमल ने महेश्वर के (शब्दभेद) की टीका को पूर्ण किया था।
- रायसिंह ने रायसिंह महोत्सव, ज्योतिष रत्नाकर (रत्नमाला) नामक दो ग्रंथ लिखे थे। इसके अलावा बाल–बोधिनी व वैधक वंशावली की रचना भी रायसिंह ने की थी।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

2 CHAPTER बजट 2024-25

राजकोषीय संकेतक

- अनुमानित राजस्व घाटा 25 हजार 758 करोड़ 11 लाख रुपए (जीएसडीपी का 1.45%)
- अनुमानित राजकोषीय घाटा 70 हजार 9 करोड़ 47 लाख रुपए (जीएसडीपी का 3.93%)
- राजस्थान का सकल राज्य घरेलू उत्पाद (GSDP) 2024-25 के लिए (वर्तमान कीमतों पर): यह 17,81,078 करोड़ रुपये रहने का अनुमान है, जो 2023-24 की तुलना में 17% की वृद्धि दर्शाता है।

अमृत कालखंड के तहत 5 साल की कार्य योजना - विकसित राजस्थान @ 2047

थीम: "सर्वजन हिताय आधारित समावेशी विकास।"

10 संकल्प-

- 350 बिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था
- बुनियादी ढांचे का विकास
- जीवन की गुणवत्ता-नागरिक सुविधाएं
- कृषि विकास और किसान कल्याण-
- औद्योगिक विकास और निवेश प्रोत्साहन
- पर्यटन, कला और संस्कृति को बढ़ावा देना-
- सतत विकास और हरित विकास-
- मानव संसाधन विकास और सभी के लिए स्वास्थ्य-
- सामाजिक सुरक्षा
- सुशासन

पेय जल:

- जल जीवन मिशन' - 25 लाख ग्रामीण परिवारों को पेयजल उपलब्ध कराना तथा 6 प्रमुख पेयजल परियोजनाओं पर कार्य प्रारंभ किया जाएगा।
- अमृत 2.0 योजना-
  - ✓ 183 शहरों/कस्बों में 2 वर्षों में पेयजल संबंधी कार्य
  - ✓ नसीराबाद से नौसर घाटी/कोटडा क्षेत्र तक जल पाइपलाइन का कार्य।
  - ✓ टोडारायसिंह-केकरी, देवली, मालपुरा और अलीगढ़-टोंक के लिए शहरी पेयजल परियोजनाओं के लिए विभिन्न कार्य।
- 2 वर्षों में आवश्यकतानुसार प्रत्येक निर्वाचन क्षेत्र में 20-20 हैंडपंप एवं 10-10 ट्यूबवेल।

ऊर्जा-

- अगले 10 वर्षों के लिए बिजली की मांग हेतु आवश्यक ऊर्जा उत्पादन हेतु कार्ययोजना (अपेक्षित मांग- 6% वृद्धि दर)
  - ✓ पारंपरिक स्रोतों से 20,500 मेगावाट क्षमता के उत्पादन से संबंधित कार्य।
  - ✓ वर्ष 2031-32 तक अक्षय ऊर्जा स्रोतों से 33,600 मेगावाट क्षमता। जिसमें से सौर (22,200 मेगावाट), पवन (8,100 मेगावाट), जलविद्युत (3,300 मेगावाट)
- पूगल, छतरगढ़ (बीकानेर) और बोडाना (जैसलमेर) में सोलर पार्कों का विकास।
- हर घर-हर खेत बिजली सुनिश्चित करने के लिए की गई पहल-
  - ✓ प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के तहत प्रत्येक जिले में आदर्श सोलर ग्राम।
  - ✓ बिजली की लीकेज रोकने के लिए इस वर्ष 25 लाख से अधिक स्मार्ट मीटर लगाए जाएंगे।

बुनियादी ढांचा:

- 5 वर्षों में 53,000 किलोमीटर लंबाई का सड़क नेटवर्क विकसित करना।
- 2,750 किलोमीटर से अधिक लंबे 9 ग्रीन फील्ड एक्सप्रेसवे।

क्षेत्रीय विकास एवं नागरिक सुविधाएं:

- 'राजस्थान क्षेत्रीय एवं नगरीय नियोजन विधेयक-2024'-शहरों के साथ-साथ परि-नगरीय क्षेत्रों के नियोजित विकास के लिए।
- जिला स्तर पर शिकायतों के प्रभावी निवारण के लिए डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी जिला उत्थान योजना (500 करोड़ रुपये)।
- चयनित शहरी निकायों में वाई-फाई सक्षम लाइब्रेरी और को-वर्किंग स्टेशन - 150 करोड़ रुपये।
- महिलाओं के लिए बायो/पिंक टॉयलेट कॉम्प्लेक्स - पहले चरण में 67।
- डांग, मगरा, मेवात और बृज क्षेत्रीय विकास योजनाओं के लिए 50-50 करोड़ रुपये।
- पूर्वी राजस्थान के दूरदराज के क्षेत्रों के विकास के लिए बृज क्षेत्रीय विकास योजनाएं।

औद्योगिक विकास:

- राजस्थान पेट्रो जोन (आरपीजेड) - बालोतरा।
- जयपुर में अमृत ग्लोबल टेक्नोलॉजी एंड एप्लीकेशन सेंटर, लागत 200 करोड़ रुपये। वैश्विक कंपनियों से निवेश आकर्षित करना।
- विभिन्न पार्क/मंडियां/पत्थर मंडी
  - ✓ टेक्सटाइल पार्क - भीलवाड़ा
  - ✓ सिरेमिक पार्क - बीकानेर
  - ✓ औद्योगिक और लॉजिस्टिक हब - बांदीकुई–दौसा
  - ✓ सौर पैनल निर्माण पार्क - कंकाणी/रोहत–पाली
  - ✓ बायोमास पेलेट और रासायनिक विनिर्माण पार्क – बांसवाड़ा
  - ✓ टाइल्स विनिर्माण पार्क - किशनगढ़ (अजमेर)
  - ✓ हस्तशिल्प पार्क - जोधपुर
  - ✓ पत्थर मंडियाँ - ब्यावर, कोटा, जालोर, राजसमंद और सिकंदरा–दौसा
  - ✓ श्री राम जानकी औद्योगिक पार्क - धर्मपुरा (बाड़मेर), माल की टूस (उदयपुर), वरकाणा (पाली), नैनवा (बूंदी)
  - ✓ इंटीग्रेटेड रिसोर्स रिकवरी पार्क- थोलाई (जमवारामगढ़)-जयपुर
- राजस्थान-एक जिला, एक उत्पाद नीति 2024, प्रतिवर्ष 100 करोड़ रुपए का व्यय।
- जयपुर में पीएम-यूनिटी मॉल, अनुमानित लागत 200 करोड़ रुपए।
- माटी कला के लिए उत्कृष्टता केंद्र (लागत 5 करोड़)

पर्यटन, कला एवं संस्कृति: जीएसडीपी (GSDP) में योगदान- 5.6%

- राजस्थान टूरिज्म इंफ्रास्ट्रक्चर एंड कैपेसिटी बिल्डिंग फंड (आरटीआईसीएफ) में 5,000 करोड़ रुपये से ज्यादा के काम होने हैं।
- जीवाश्म पार्क और ओपन रॉक्स संग्रहालय - (खाभा किला) जैसलमेर
- एमआईसीई (MICE) (बैठकें, प्रोत्साहन, सम्मेलन, प्रदर्शनी) पर्यटन के लिए जयपुर में राजस्थान मंडपम
- इको- पर्यटन स्थल- सांभर झील, खिंचन संरक्षण रिजर्व, शेरगढ़ अभयारण्य, मनसा माता संरक्षण रिजर्व और बस्सी अभयारण्य
- ईवी (EV) आधारित परिवहन प्रणाली - (पांडुपोल) सरिस्का और (त्रि नेत्र गणेशजी) रणथंभौर
- अयोध्या और काशी विश्वनाथ की तर्ज पर खाटूश्यामजी के विकास के लिए 100 करोड़ रुपये रुपये का प्रावधान।
- डूंगरपुर और बांसवाड़ा में जनजातीय नायकों के स्मारक।
- कालीबाई संग्रहालय - उदयपुर
- शिल्पग्राम - डूंगरपुर
- राज्य अभिलेखागार-बीकानेर की ऐतिहासिक लिपियों का डिजिटलीकरण
- जयपुर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे में नया राज्य टर्मिनल
- ग्रीनफील्ड हवाई अड्डा- कोटा
- उड़ान प्रशिक्षण - किशनगढ़ (अजमेर) और हमीरगढ़ (भीलवाड़ा)

वन एवं पर्यावरण:

- अगले वर्ष से 'ग्रीन बजट' पेश किया जाएगा।
- राजस्थान को हरित प्रदेश बनाने के लिए वर्ष 2028 तक वन क्षेत्र में 20,000 हेक्टेयर की वृद्धि का लक्ष्य रखा गया है।

- वृक्षारोपण महाभियान के तहत 7 करोड़ पौधारोपण का लक्ष्य।
- मिशन हरियालो-राजस्थान - 5 वर्षों में 4,000 करोड़ रुपये के विभिन्न कार्य
  - ✓ 50 नई नर्सरियां स्थापित कर हर साल 10 करोड़ पौधे तैयार करना
  - ✓ हर जिले में मातृ वन
  - ✓ एक जिला-एक प्रजाति के तहत जिले विशेष के पौधे तैयार करना
  - ✓ 2 हजार वन मित्र-सेवानिवृत्त कर्मचारी को संरक्षक की जिम्मेदारी दी जा सकती है।
- वन उपज और संबंधित उत्पादों के लिए ब्लॉक स्तर पर मार्केटिंग हब- 25 करोड़ रुपये।
- वन और वन्यजीव प्रशिक्षण सह प्रबंधन संस्थान - झालाना-जयपुर।
- केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान-भरतपुर के पास प्राणी उद्यान (चिड़ियाघर) और एक्वेरियम।
- वॉक इन एवियरी (Walk in Aviary) - नाहरगढ़ प्राणी उद्यान।
- गोडावण संरक्षण के लिए शिकारी प्रूफ बाड़ लगाने के साथ नए बाड़े।
- जैविक उद्यान - अलवर।
- अलवर और भिवाड़ी में प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली।

युवा विकास एवं कल्याण:

- 5 वर्षों में 4 लाख भर्तियाँ, चालू वर्ष में 1 लाख से अधिक भर्तियाँ
- राज्य कौशल नीति- 2 वर्षों में 1,50000 से अधिक युवाओं को प्रशिक्षण।
- युवाओं को उत्कृष्ट मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए 'अटल उद्यमिता कार्यक्रम' (Atal Entrepreneurship Programme)।
- 'अटल उद्यमिता कार्यक्रम' के तहत चयनित स्टार्टअप्स को आई-स्टार्ट फंड के माध्यम से 10 करोड़ रुपये तक का वित्तपोषण
- फंड ऑफ फंड्स (Fund of Funds) (100 करोड़)- इक्विटी फंडिंग द्वारा स्टार्टअप्स को वित्तीय सहायता,
- जयपुर, भरतपुर, बीकानेर और उदयपुर में अटल इनोवेशन स्टूडियो और एक्सेलरेटर स्थापित किए जाएंगे।
- एवीजीसी-एक्सआर (AVGC-XR) नीति (एनीमेशन, विजुअल इफेक्ट्स, गेमिंग, कॉमिक्स-एक्सटेंडेड रियलिटी नीति)
- सीखें, कमाएँ और आगे बढ़ें (लीप LEAP) कार्यक्रम-स्टार्टअप संस्थापकों और युवाओं का कौशल विकास
- भरतपुर, बीकानेर और अजमेर में राजस्थान प्रौद्योगिकी संस्थान (आरआईटी)।
- पिंडवाड़ा-सिरोही में प्रवासी पशुपालकों के लिए आवासीय विद्यालय
- 8वीं, 10वीं और 12वीं बोर्ड परीक्षाओं में राज्य और जिला स्तर पर मेरिट पाने वाले 33,000 विद्यार्थियों को 3 साल की इंटरनेट कनेक्टिविटी के साथ टैबलेट।
- जयपुर में वास्तु और ज्योतिष के लिए उत्कृष्टता केंद्र।
- चरणबद्ध तरीके से संभाग स्तर पर मॉडल वेद विद्यालय।

खेल नीति-2024

- राजस्थान खेल आधुनिकीकरण मिशन
- महाराणा प्रताप खेल विश्वविद्यालय, 250 करोड़ रुपये
- संभाग स्तर पर खेल महाविद्यालय, प्रत्येक महाविद्यालय के लिए 50 करोड़ रुपये
- 'एक जिला-एक खेल' योजना और प्रत्येक जिले में खेल अकादमी
- खेल जीवन बीमा योजना-अंतरराष्ट्रीय पदक विजेताओं के लिए 25 लाख तक दुर्घटना और जीवन बीमा कवरेज
- एसएमएस स्टेडियम, जयपुर में अत्याधुनिक अल्ट्रा फिटनेस सेंटर
- 10 हजार से अधिक आबादी वाली ग्राम पंचायतों में ओपन जिम और खेल मैदान
- खेलो राजस्थान युवा खेल
- युवा दिवस पर राज्य युवा महोत्सव-12 जनवरी

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य:

- 8.26% बजट चिकित्सा एवं स्वास्थ्य पर खर्च किया जाता है।
- एमएए (MAA) योजना- नए बाल चिकित्सा पैकेज, निजी चिकित्सा संस्थानों के लिए पैनल मानदंडों में छूट।
- गर्भवती महिलाओं के लिए पूरे राज्य में मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य (एमएए) वाउचर योजना।
- प्रत्येक निर्वाचन क्षेत्र में 'आयुष्मान मॉडल सीएचसी', 125 करोड़ रुपये।
- एसएमएस मेडिकल कॉलेज, जयपुर में आयुष्मान टावर।
- राजस्थान स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय (आरयूएचएस) में सुपर-स्पेशलिटी सुविधाएं।
- बीकानेर, जोधपुर, उदयपुर, भरतपुर और कोटा मेडिकल कॉलेजों में स्पाइनल इंजरी सेंटर।
- जेके लोन अस्पताल, जयपुर में मेडिकल जेनेटिक्स के लिए उत्कृष्टता केंद्र।
- अजमेर में आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा विश्वविद्यालय
- महवा-दौसा में आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा महाविद्यालय

सड़क सुरक्षा:

- प्रत्येक संभागीय मुख्यालय पर सड़क सुरक्षा टास्क फोर्स

सामाजिक सुरक्षा:

- एससी और एसटी फंड को बढ़ाकर 1500 करोड़ रुपये किया गया (पहले 1000 करोड़ रुपये था)
- बाबा साहब अंबेडकर आदर्श ग्राम विकास योजना (200 करोड़ रुपये) 10,000 से अधिक आबादी वाले ग्रामीण क्षेत्रों में वंचित वर्गों के लिए बुनियादी ढांचे का विकास करने के लिए।
- गोविंद गुरु जनजाति क्षेत्रीय विकास योजना (75 करोड़ रुपये) - टीएसपी क्षेत्र के अनुसूचित जनजातियों के परिवारों का एकीकृत विकास।
- आंगनबाड़ी केंद्रों पर बच्चों के लिए सप्ताह में 3 दिन दूध।
- 2000 आंगनबाड़ी केंद्रों को मॉडल आंगनबाड़ी के रूप में उन्नत करना।
- लखपति दीदी योजना के तहत लक्ष्य बढ़ाकर 15 लाख (पहले 5 लाख महिलाएं) किया गया।
- कामकाजी महिलाओं के लिए जिला स्तर पर छात्रावास और पेइंग गेस्ट की सुविधा।
- संभाग स्तर पर बालिकाओं के लिए सैनिक स्कूल।
- दुर्लभ रोग निधि - 50 करोड़।
- जामडोली-जयपुर में स्वयं सिद्ध उत्कृष्टता केंद्र, 200 करोड़ रुपये।
- संभाग स्तर पर स्वयं सिद्ध आश्रम

सुशासन

- कर्मशिला-भरतपुर में एकीकृत कार्यालय परिसर सह सेवा केंद्र
- 20 नई नगरपालिकाएं
- नई नगर परिषद- पुष्कर-अजमेर, लालसोट-दौसा और शाहपुरा-जयपुर।
- नया नगर निगम-पाली, भीलवाड़ा।
- एकल खिड़की-उसी दिन सेवा वितरण-24 घंटे के भीतर विभिन्न विभागों की 25 सेवाएं।
- राज डी.एक्स.-देश का पहला डेटा एक्सचेंज।
- आपदा रिकवरी डेटा सेंटर का उन्नयन-जोधपुर।
- पद्मिनी, कालीबाई और अमृतादेवी महिला पुलिस बटालियन।
- 500 कालिका पेट्रोलिंग यूनिट।

कर्मचारी कल्याण

- पेंशनभोगियों के लिए आउट डोर मेडिकल व्यय सुविधा में 50000 रुपये तक की वृद्धि।
- ग्रेच्युटी की अधिकतम सीमा - 25 लाख रुपये तक बढ़ाई गई।
- बिशन सिंह शेखावत पत्रकारिता पुरस्कार।

कृषि बजट (पहला कृषि बजट - 2022)

सिंचाई

- राजस्थान सिंचाई जल ग्रिड मिशन, 50 हजार करोड़ रुपए से अधिक के कार्य।
- ईआरसीपी (ERCP)- चंबल बेसिन में 5 महत्वपूर्ण लिंक और परियोजनाओं का चरणबद्ध तरीके से कार्य। ईआरसीपी से 21 जिले लाभान्वित होंगे।
- सरकार वर्ष 2027 तक किसानों को सिंचाई के लिए दिन में बिजली उपलब्ध कराने को सुनिश्चित करेगी।

कृषि विकास :

- कस्टम हायरिंग सेंटर का लक्ष्य बढ़ाकर 1000 किया गया (पहले 500 था)
- प्रत्येक कृषि जलवायु क्षेत्र में 2 क्लस्टर स्थापित किए जाएंगे।
- गोवर्धन जैविक खाद योजना- मवेशियों से जैविक खाद तैयार करने वाले किसानों को प्रति किसान 10,000 रुपये की सहायता दी जाएगी (ब्लॉक स्तर पर 50-50 किसानों का चयन किया जाएगा)
- प्रत्येक जिला मुख्यालय पर 2 वर्षों में कृषि क्लीनिक।
- नमो ड्रोन दीदी योजना- कृषि कार्यों के लिए ड्रोन पर सहायता के साथ-साथ 1000 महिला स्वयं सहायता समूहों को नैनो यूरिया और कीटनाशक के उपयोग पर 2,500 रुपये प्रति हेक्टेयर की सब्सिडी दी जाती है।
- ज्ञान संवर्धन कार्यक्रम- पहले चरण में 100 युवा किसानों को इजरायल और अन्य देशों में प्रशिक्षण प्राप्त करने का मौका दिया जाएगा।
- देश के विभिन्न राज्यों में 5000 युवा किसानों को प्रशिक्षण दिया जाएगा।
- उत्कृष्टता केंद्रों की संख्या 9 से बढ़ाकर 18 की जाएगी।

सहकारी और कृषि विपणन:

- भूमि सुधार के लिए 100 करोड़ रुपये के दीर्घकालिक कृषि ऋण।
- दीर्घकालिक गैर-कृषि ऋणों के लिए 5% ब्याज सब्सिडी।
- 500 नए किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ)।

मंडियाँ और प्रसंस्करण संयंत्र

मंडियाँ	स्थान
फूल मंडी	जामवाड़मार्ग (जयपुर)
कृषि मंडी	रामगढ़ पचवारा- दौसा, नसीराबाद- अजमेर, पीपलू - टोंक
फलों और सब्जियों की मंडी	जहाजपुर (शाहपुरा)
गाजर मंडी	श्री गंगानगर
जीरा मंडी	जैसलमेर
लहसुन मंडी	मनोहर थाना (झालावाड़)
फूड पार्क	भूसावर (भरतपुर)
खाद्य प्रसंस्करण पार्क	भरतपुर
प्रसंस्करण संयंत्र	**स्थान**
एग्री प्रोसेसिंग प्लांट	भूसावर (भरतपुर)
अमरूद, आंवला और मिर्च प्रसंस्करण संयंत्र	सवाई माधोपुर
जीरा	मेड़ता (नागौर)
इसबगोल	सिरोही
मसाले	जोधपुर और बारां
अनार	बलोतरा

पशुपालन एवं डेयरी:

- मुख्यमंत्री पशुपालन विकास कोष - 250 करोड़ रुपये
  - ✓ सेक्स सॉर्टेड सीमेन योजना के तहत 75% सब्सिडी
  - ✓ 500 पशु चिकित्सा उप-केंद्र
  - ✓ 100 पशु चिकित्सा उप-केंद्रों को पशु चिकित्सालयों में अपग्रेड करना
- मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा योजना - 400 करोड़ रुपये
- इस योजना के तहत 5-5 लाख मवेशी/भैंस, 5-5 लाख भेड़/बकरी और 1 लाख ऊंटों को बीमा दिया जाएगा।
- नवजात ऊंट के लिए ऊंट पालकों को दी जाने वाली वित्तीय सहायता को 10,000 रुपये प्रति वर्ष से बढ़ाकर 20,000 रुपये किया गया है।
- दुग्ध प्रसंस्करण संयंत्रों का उन्नयन- सरदारशहर-चूरू, रानीवाड़ा-सांचौर झालावाड़, भरतपुर, नागौर और बीकानेर
- पाली में उन्नत दूध पाउडर संयंत्र
- कोटा में पशु आहार संयंत्र।

3 CHAPTER कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र

राज्य में कृषि की स्थिति-

(अ) सकल राज्य मूल्य वर्धन (GSVA)

	स्थिर मूल्यों पर	स्थिर मूल्य पर वृद्धि दर	प्रचलित मूल्यों पर	प्रचलित मूल्य पर वृद्धि दर
GSDP में कृषि का हिस्सा	26.21%	2.13%	26.72%	9.64%
संयुक्त वार्षिक वृद्धि दर (CAGR) (वर्ष 2019 - 20 से 2023 - 24 तक)	3.86%		9.99%	

(ब) संबद्ध क्षेत्र का क्षेत्रवार योगदान (प्रचलित मूल्यों पर):-

	क्षेत्र	योगदान	वृद्धि
1.	पशुधन	48.58%	5.83%
2.	फसलें	44.53%	-1.61% (कमी)
3.	वानिकी एवं लॉगिंग	6.40%	2.82%
4.	मत्स्य	0.49%	15.21%

- कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र के उप क्षेत्रों का प्रचलित मूल्यों पर वर्ष 2023-24 (द्वितीय अग्रिम अनुमान) में योगदान

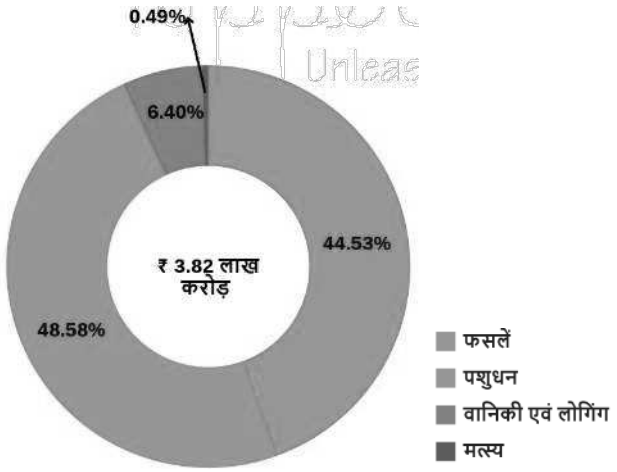

भू-उपयोग

- राजस्थान का कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल - 342.81 लाख हेक्टेयर।

	भूमि के प्रकार	प्रतिशत
1.	शुद्ध बोया गया क्षेत्र	53.74
2.	बंजर भूमि	10.39
3.	वानिकी	8.09
4.	ऊसर और कृषि अयोग्य भूमि	6.89
5.	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	5.92
6.	अन्य चालू पड़त भूमि	5.68
7.	स्थायी चारागाह भूमि	4.82
8.	चालू पड़त	4.38
9.	वृक्षों के झुण्ड और बाग	0.09

भू उपयोग सांख्यिकी 2022-23

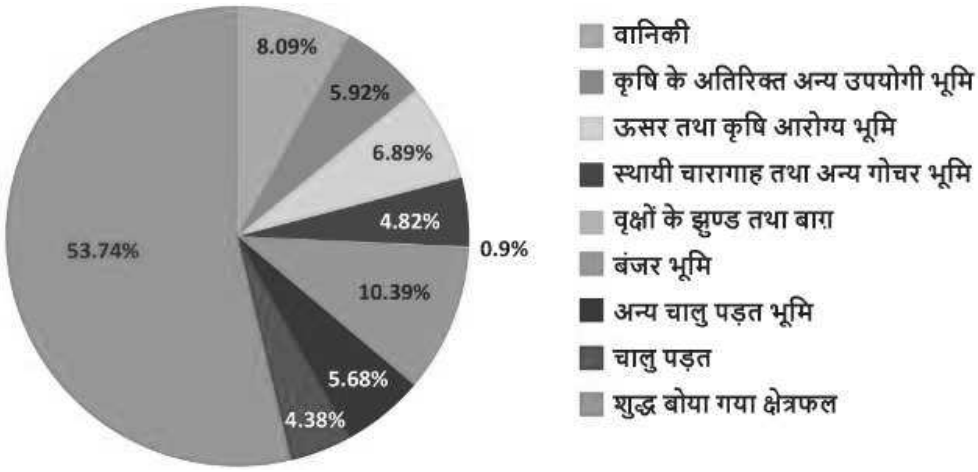

प्रचालित जोत धारक

	कृषि गणना (2015-16)	परिवर्तन (2010-11 से)
कुल प्रचालित भूमि जोतों की संख्या	76.55 लाख	11.14% (वृद्धि)
कुल जोतों का क्षेत्रफल	208.73 लाख हेक्टेयर	1.24% (कमी)
भूमि जोतों का औसत आकार	2.73 हेक्टेयर	11.07 % (कमी)

महिला प्रचालित जोत धारक

	(2015-16)	(2010-11)
संख्या	7.75 लाख	41.94 % (वृद्धि)
क्षेत्र	16.55 लाख हेक्टेयर	24.44 % (वृद्धि)

जोत धारक	आकार	परिवर्तन
सीमान्त (1.0 हैक्टेयर से कम)	40.12 %	19.79% (वृद्धि)
लघु (1.0-2.0 हैक्टेयर)	21.90 %	10.50% (वृद्धि)
अर्ध-मध्यम (2.0-4.0 हैक्टेयर)	18.50%	5.67% (वृद्धि)
मध्यम (4.0-10.0 हैक्टेयर)	14.79 %	13.20% (वृद्धि)
वृहद (10.0 हैक्टेयर एवं अधिक)	4.69%	11.14 % (कमी) कारण – जोत के आकार में कमी

कृषि उत्पादन

क्र.सं.	फसल उत्पादन	उत्पादन (लाख मीट्रिक टन में)
1.	खाद्यान्न उत्पादन	कुल

2023-24	परिवर्तन
245.01 लाख मीट्रिक टन	3.08 ↓

	2023-24 (लाख मीट्रिक टन में)	परिवर्तन
खरीफ	89.83	18.04% ↓
रबी	155.18	8.37% ↑

			2023-24	परिवर्तन	
		अनाज	208.61	3.59% ↓	
		दलहन	36.40	0.05% ↓	
	तिलहन	2023-24	परिवर्तन		
		101.24	2.10% ↓		
	गन्ना	2023-24	परिवर्तन		
		3.28	4.13% -↑		
	कपास	2023-24	परिवर्तन		
		26.21	5.58% ↓		

क्र.सं.	फसल	प्रथम स्थान	द्वितीय स्थान	राजस्थान का देश के कुल उत्पादन में योगदान (प्रतिशत में)
1.	बाजरा	राजस्थान	उत्तरप्रदेश	38.98
2.	सरसों	राजस्थान	मध्यप्रदेश	46.63 (2^{nd})
3.	पोषक अनाज	कर्नाटक	राजस्थान	13.89
4.	कुल तिलहन	राजस्थान	मध्यप्रदेश	22.25
5.	कुल दलहन	मध्यप्रदेश	महाराष्ट्र	14.51
6.	मूंगफली	गुजरात	राजस्थान	16.83
7.	चना	महाराष्ट्र	मध्यप्रदेश	19.28
8.	ज्वार	महाराष्ट्र	कर्नाटक	12.67
9.	सोयाबीन	महाराष्ट्र	मध्यप्रदेश	7.12
10.	ग्वार	राजस्थान	-	87.69 (अधिकतम)

कृषि से संबंधित योजनाएं

बीज

- मुख्यमंत्री बीज स्वावलंबन योजना:
  - ✓ प्रारंभ: 2017
  - ✓ प्रारंभ में 3 कृषि-जलवायुवीय खण्डों (कोटा, भीलवाड़ा और उदयपुर) में क्रियान्वयन ।
  - ✓ वर्ष 2018-19 से राज्य के समस्त 10 कृषि-जलवायुवीय खण्डों में क्रियान्वयन किया गया। (सम्पूर्ण राजस्थान)
  - ✓ उद्देश्य: किसानों द्वारा स्वयं के खेतों में गुणवत्तायुक्त बीजों के उत्पादन को बढ़ावा देना।
  - ✓ इस योजनान्तर्गत गेहूं, जौ, चना, ज्वार, सोयाबीन, सरसों, मूंग, मोठ मूंगफली एवं उड़द की 10 वर्ष से कम अवधि तक की पुरानी किस्मों के बीज उत्पादन को बढ़ावा दिया जा रहा है।

सिंचाई

1. प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (PMKSY) 2015
   - नोडल विभाग- बागवानी विभाग।
   - उद्देश्य: खेत तक पानी की पहुँच को बढ़ाना और सिंचाई सुनिश्चित करने हेतु कृषि योग्य क्षेत्र का विस्तार करना एवं खेत पर पानी के उपयोग की दक्षता में सुधार करना
   - केंद्र : राज्य = 60: 40

2. प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना - सूक्ष्म सिंचाई (PMKSY-MI)

- इस योजना के तहत सूक्ष्म सिंचाई की ड्रिप और स्प्रिंकलर तकनीकों को बढ़ावा दिया जाता है।
- केंद्र : राज्य = 60:40
- भारत सरकार और राज्य सरकार अतिरिक्त सब्सिडी भी प्रदान कर रही है।

<u>उत्पादकता</u>

1. राष्ट्रीय कृषि विस्तार एवं तकनीकी मिशन (NMAET) 2014

- उद्देश्य:
  - ✓ कृषकों की सक्रिय भागीदारी के साथ 'रणनीतिक अनुसंधान और विस्तार योजना बनाना ।
  - ✓ संसाधनों के आवंटन में ब्लॉक स्तर पर सभी हितधारकों के बीच कार्यक्रम समन्वय और एकीकरण को बढ़ाना।
  - ✓ केंद्र : राज्य = 60: 40
- इसमें 3 उप-मिशन शामिल हैं-
  - ✓ कृषि विस्तार पर उप-मिशन (SMAE)
  - ✓ बीज और रोपण सामग्री पर उप-मिशन (SMSP)
  - ✓ कृषि मशीनीकरण पर उप-मिशन (SMAM)

2. राष्ट्रीय सतत कृषि मिशन (NMSA) 2014

- केंद्र : राज्य = 60 : 40
- NMSA के तीन उप-मिशन:-

  अ. वर्षा आधारित क्षेत्र विकास (RAD)।

  ब. मृदा स्वास्थ्य कार्ड:- प्रारंभ - 19 फरवरी, 2015 सूरतगढ़ (गंगानगर) से
  - ✓ मृदा स्वास्थ्य कार्ड दिवस- 19 फरवरी
  - ✓ उद्देश्य:
    - ○ मृदा परीक्षण सेवाओं को बढ़ावा देना।
    - ○ मृदा स्वास्थ्य कार्ड जारी करना।
    - ○ विभिन्न फसलों के लिए विवेकपूर्ण पोषक तत्व प्रबंधन।
  - ✓ राज्य के सभी 352 ब्लॉकों में प्रभावी।

  स. कृषि वानिकी पर उप-मिशन (SMAF):-
  - ✓ प्रारंभ - 2017-18
  - ✓ उद्देश्य: वृक्षारोपण को प्रोत्साहित करना।

3. परम्परागत कृषि विकास योजना (PKVY):

- जैविक खेती में पर्यावरण अनुकूल न्यूनतम लागत तकनीकों के प्रयोग से रसायनों एवं कीटनाशकों का प्रयोग कम करते हुए कृषि उत्पादन किया जाता है।

4. राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (RKVY):-

- प्रारंभ - वर्ष 2007-08
- केंद्र : राज्य = 60: 40
- उद्देश्य:
  - ✓ कृषि में निवेश को बढ़ावा देना।
  - ✓ कृषि में 4% विकास दर सुनिश्चित करना।

5. राष्ट्रीय बागवानी मिशन (NHM):- (2005)

- राजस्थान के 24 जिलों में कार्यान्वित।
- फलों, मसालों और फूलों का क्षेत्रफल तथा उत्पादन बढ़ाना।

6. सौर ऊर्जा आधारित पंप परियोजना [प्रधानमंत्री 'कुसुम' योजना घटक 'बी']

- पीएम 'कुसुम' (प्रधानमंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा और उत्थान महाभियान)
- प्रारंभ- फरवरी 2019 में
- मंत्रालय: नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय,भारत सरकार
- योजनान्तर्गत 3 घटकों के तहत वर्ष 2022 तक 30.8 गीगावॉट अतिरिक्त सौर क्षमता हासिल की जाएगी।
- पहला सौर ऊर्जा संयंत्र - भालोजी गांव (कोटपुतली)
- प्रावधान: 3 HP से 10 HP क्षमता तक के सौर ऊर्जा पंप संयंत्र की स्थापना।

- इस योजना के तहत –
  - ✓ कुल 60% अनुदान (केन्द्रांश – 30%, राज्यांश – 30%)
  - ✓ किसान – 30% बैंक से ऋण प्राप्त कर सकता है
  - ✓ 10% किसान द्वारा देय

सहयोग एवं सुरक्षा

1. तारबंदी द्वारा फसल सुरक्षा हेतु अनुदान
   - प्रारंभ- वर्ष 2017-18 में।
   - नीलगाय , जंगली जानवरों तथा आवारा पशुओं से सुरक्षा।
   - राजस्थान फसल सुरक्षा मिशन में शामिल (2022-23 से दो वर्ष के लिए)।
2. राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन (NFSM):-
   - प्रारंभ- वर्ष 2007-08
   - केंद्र: राज्य = 60:40
   - वर्ष 2010-11 से राज्य के सभी जिलों को 'NFSM दलहन' में शामिल किया गया।
3. प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY):-
   - प्रारंभ- 18 फरवरी, 2016
   - योजना में खाद्यान्न (अनाज, बाजरा, दालें), तिलहन और वाणिज्यिक/बागवानी फसलें शामिल हैं।

फसल	प्रीमियम राशि
खरीफ़ →	2%
रबी →	1.5%
वाणिज्यिक/बागवानी →	5%

   - सरकार द्वारा जारी संशोधित निर्देशानुसार खरीफ 2020 से असिंचित क्षेत्रों के लिये 30 प्रतिशत एवं सिंचित क्षेत्रों के लिये 25 प्रतिशत की अधिकतम प्रीमियम पर अनुदान भारत सरकार द्वारा वहन किया जायेगा।

4. कृषि शिक्षा में अध्ययनरत छात्राओं को प्रोत्साहन राशि

उच्च माध्यमिक (कृषि)	₹15000 प्रति छात्रा प्रति वर्ष
स्नातक (कृषि) और स्नातकोत्तर (कृषि)	₹24000 प्रति छात्रा प्रति वर्ष
पी.एच.डी	₹40000 प्रति छात्रा प्रति वर्ष

कृषि विपणन

- कृषि विपणन निदेशालय - वर्ष 1974.
- कृषक कल्याण कोष/किसान कल्याण निधि
  - ✓ गठन - 16 दिसंबर 2019
- वित्त प्रावधान
  - ✓ प्रारंभिक प्रावधान - 1,000 करोड़ रुपये
  - ✓ जिसमें वृद्धि करके 7,500 करोड़ रुपये किया गया
- कृषि विपणन नीति:
  - ✓ राजस्थान कृषि प्रसंस्करण, कृषि व्यवसाय एवं कृषि निर्यात प्रोत्साहन नीति, 2019 (12 दिसंबर, 2019).(आर्थिक समीक्षा- 2022-23 के अनुसार)

कृषि विपणन की अन्य योजनाएँ

1. मुख्यमंत्री/राजीव गांधी कृषक साथी योजना:-
   - प्रारंभ - 2009
   - कृषि कार्य के दौरान मृत्यु होने पर 2 लाख की सहायता
   - लाभार्थी- : किसान, कृषि मजदूर, हम्माल (कुली)
2. महात्मा ज्योतिबा फुले मंडी श्रमिक कल्याण योजना - (2015)
   - विशेषताएं

     अ. गर्भावस्था सहायता - 45 दिनों की मजदूरी के समतुल्य सहायता राशि ।

     ब. विवाह सहायता: -
     - ✓ महिला श्रमिक को स्वयं की शादी के लिए- 50,000 रुपये
     - ✓ पुत्री विवाह(अधिकतम -2) के लिए- 50,000 रुपये

स. छात्रवृत्ति: - लाइसेंस प्राप्त मजदूर के बेटे/बेटी को 60% या उससे अधिक अंक प्राप्त करने पर।

द. चिकित्सा सहायता - गंभीर बीमारी पर अधिकतम 20,000 रुपये

इ. पैतृक अवकाश - 15 दिनों की मजदूरी के समतुल्य राशि का पैतृक अवकाश।

3. कृषक उपहार योजना
   - ई-नाम पोर्टल - जनवरी 2022
   - प्रत्येक 10 हजार (या इसके गुणक) की बिक्री पर डिजिटल कूपन जारी किया जाएगा।

4. प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यम औपचारिकीकरण (PM-FME):-
   - देश में असंगठित खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र को उन्नत करना।
   - राज्य में नोडल एजेंसी - राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड
   - केंद्र : राज्य = 60: 40
   - कार्यावधि- 5 वर्ष (2021 से 2024-25 तक)

5. सावित्रीबाई फुले महिला कृषक सशक्तिकरण योजना:
   - कृषि उपज की बिक्री पर ई-भुगतान को बढ़ावा देना।
   - 50,000 से अधिक के ई-भुगतान पर, महिला किसान के बैंक खाते में 1000 की वित्तीय सहायता।

आधारभूत संरचना विकास हेतु:-

1. प्रत्येक जिले में मिनी फूड पार्क की स्थापना (बजट 2021-22)
2. रीको (RIICO) द्वारा 4 एग्रो फूड पार्क की स्थापना [बोरनाडा (जोधपुर), रनपुर (कोटा), अलवर, श्री गंगानगर]
3. भारत सरकार द्वारा मेगा फूड पार्क की स्थापना [रूपनगढ़ (अजमेर), मथानिया (जोधपुर), पलाना (बीकानेर)]

जल संसाधन

- राज्य में कुल 39.36 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई सुविधाएं उपलब्ध करवाई गई हैं।
- वर्ष 2022-23 के दौरान 8 वृहद परियोजनाएं, 5 मध्यम परियोजनाएं (गरदरा, टाकली, गागरिन, ल्हासी एवं हथियादेह तथा 41 लघु सिंचाई परियोजनाएं प्रक्रियाधीन हैं।

महत्वपूर्ण वृहद सिंचाई परियोजनाएं:

परवन वृहद् परियोजना	➢ निर्माण- 'परवन' नदी (झालावाड़) ➢ लाभान्वित क्षेत्र- झालावाड़, बारां, कोटा
धौलपुर लिफ्ट	➢ सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली पर आधारित एक पूर्ण लिफ्ट सिंचाई और पेयजल परियोजना।
नर्मदा नहर परियोजना	➢ भारत में पहली बड़ी सिंचाई परियोजनाएँ। ➢ जालौर और बाड़मेर जिलों का कमांड क्षेत्र।
नवनेरा बैराज	➢ पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना (ERCP) का अभिन्न हिस्सा ।
कालीतीर लिफ्ट	➢ पार्वती और रामसागर बांध से धौलपुर जिले (483 गावों, 3 बस्तियों) की पेयजल मांग की आपूर्ति के लिए ।
अपर हाई लेवल नहर परियोजना (माही)	➢ माही परियोजना का "सैडल" बांध।
पीपलखूंट हाई लेवल नहर परियोजना	➢ माही बांध से जाखम बांध तक।
राजस्थान जल क्षेत्र आजीविका सुधार परियोजना (RWSLIP)	➢ जापान अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एजेंसी (जायका) द्वारा वित्तपोषित।

	➢ उद्देश्य: मौजूदा सिंचाई सुविधाओं और कृषि सहायता सेवाओं में सुधार के माध्यम से जल उपयोग दक्षता और कृषि उत्पादकता में सुधार करके किसानों की आजीविका में सुधार करना।
राजस्थान मरू क्षेत्र हेतु जल क्षेत्र पुनर्गठन परियोजना (RWSRPD)	➢ न्यू डेवलपमेंट बैंक द्वारा वित्त पोषित। (70% तक) ➢ लाभान्वित क्षेत्र-श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, चूरू, नागौर, बीकानेर, जोधपुर, सीकर, झुंझुनू, जैसलमेर और बाड़मेर जिले।

राष्ट्रीय जल विज्ञान परियोजना:-

- वित्त पोषण- जल संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार + विश्व बैंक द्वारा
- लागत- 134 करोड़ (भारत सरकार से 100% अनुदान)
- परियोजना अवधि- 8 वर्ष (2016 से सितंबर 2025)
- नोडल विभाग - जल संसाधन विभाग, राजस्थान
- कार्यवाही- पारदर्शी जल प्रबंधन के लिए, सबसे पहले बीसलपुर बांध और जवाई बांध के साथ-साथ 7 बांधों और 2 नहरों (गंग-भाखड़ा नहर प्रणाली और नर्मदा नहर प्रणाली) पर SCADA (पर्यवेक्षी नियंत्रण और डेटा अधिग्रहण) प्रणाली स्थापित की गई है।

इंदिरा गांधी फीडर और सरहिंद फीडर की री-लाइनिंग:-

- भारत सरकार और पंजाब सरकार के बीच समझौता ज्ञापन
- केंद्र-60%, राज्य-40%.
- सरहिंद फीडर
  - ✓ पंजाब (54.15%)
  - ✓ राजस्थान (45.85%)
- राजस्थान को केंद्र सरकार से 60% हिस्सा राशि प्राप्त होगी।

रिपेयर-रिनोवेशन -रिस्टोरेशन परियोजना (RRR Project) -

- प्रारंभ - जनवरी, 2005
- वर्ष 2017-18 में इसे प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना 'हर खेत को पानी' में शामिल किया गया।
- केंद्र: राज्य = 60: 40
- वर्तमान में राज्य की 37 परियोजनाओं को इसमें शामिल किया गया है।

भू-जल संसाधन

- भू-जल संसाधनों का आंकलन प्रत्येक 3 वर्ष के अंतराल में किया जाता है।
- भू-जल, उपलब्धता के आधार पर- 302 ब्लॉक में से
  - ✓ सुरक्षित: 38
  - ✓ विषम : 23
  - ✓ अति दोहित: 216
- राज्य में भू-जल दोहन की दर 150% है।

अटल भूजल योजना

- भारत सरकार और विश्व बैंक (50:50) के सहयोग से शुरुआत
- प्रारंभ- 1 अप्रैल, 2020
- अवधि:- 2020-21 से 2024-25 तक (5 वर्ष)
- योजना में शामिल 7 राज्य - हरियाणा, गुजरात, कर्नाटक, महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश
- उद्देश्य: सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से भूजल स्तर और प्रबंधन में सुधार करना।
- नोडल विभाग - भूजल विभाग।

मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान 2.0

- राज्य की 349 पंचायत समितियों में चरणवार तरीके से 5000 से 8000 हेक्टेयर क्षेत्र का चयन कर जल संग्रहण और संरक्षण कार्य करवाए जायेंगे ।

वाटरशेड विकास

- राज्य में उपलब्ध कुल जल संसाधनों का 1.16%।